2

चूहों का धमाल

• कहानी •

झुरमुट	छुट्टियाँ	स्टेशन	सज्जन	हंडियाँ	श्राद्ध
रसगुल्ला	झेंपकर	रोज़गार	पंडित	ज़रूरत	सेक्रेटरी

आधी छुट्टी होते ही लड़कों का समूह पेड़ों के झुरमुट में खड़े होकर बतियाने लगा। सभी लड़के इस बात पर सहमत थे कि जो नए अध्यापक स्कूल में आने वाले हैं, उनसे वे बिलकुल नहीं पढ़ेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए।

उन्होंने कहीं से नए अध्यापक का नाम भी सुन लिया था। नाम था—काली कुमार तर्कालंकार।

छुट्टियों में सब अपने-अपने घर चले गए। सारी छुट्टियाँ मौज-मस्ती में निकल गईं। पता ही नहीं चला कि छुट्टियाँ कब खत्म हो गईं। जैसे ही छुट्टियाँ खत्म हुईं, लड़के अपने-अपने घरों से रेलगाड़ी में बैठकर स्कूल लौटने लगे। लड़कों के बीच एक लड़का कभी-कभार कुछ-कुछ अटपटी-सी कविता कर लिया करता था। उसी की रची कविता को लड़के ऊँची-नीची आवाज़ में मज़े ले-लेकर गा रहे थे।

गाड़ी एक छोटे से स्टेशन पर रुकी और वहाँ से एक बूढ़े सज्जन भी गाड़ी में चढ़े। सामान के नाम पर उनके पास एक बिछौना तथा गोल मुँह वाली मिट्टी की दो-तीन हंडियाँ थीं, जिनका मुँह कपड़े से बंद था। साथ ही लोहे का एक ट्रंक भी था। और थीं कुछ छोटी-बड़ी पोटलियाँ। लड़कों के समूह में एक शरारती लड़का भी था जिसे सब बिचुकन कहते थे। वह सहसा बूढ़े को देखकर ज़ोर से कहने लगा, "अरे बुड्ढे, यहाँ जगह नहीं है। किसी दूसरे डिब्बे में चले जाओ।"

बूढ़े आदमी ने प्यार से कहा, "बड़ी भीड़ है, कहीं जगह नहीं है। मैं एक कोने में बैठ जाऊँगा। तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।" और वे सीट पर बैठने की बजाए नीचे फर्श पर अपना बिछौना फैलाकर बैठ गए।

शिक्षण संकेत

- पाठ को पढ़ाते समय बच्चों के मन में अध्यापकवर्ग के प्रति सम्मान की भावना जगाएँ। रेल अथवा बस द्वारा यात्रा करते समय अपने साथ कम सामान लेकर चलें जिससे कि यात्रा करने में अन्य लोगों को परेशानी न हो। सदाचार का पालन करें।

लड़कों ने पूछा, "बाबा, आप कहाँ जा रहे हैं?" बाबा कुछ जवाब देते, उससे पहले ही बिचुकन बोल उठा, "श्राद्ध करने जा रहे होंगे।"

बाबा हैरानी से बोले, "श्राद्ध! किसका श्राद्ध?"

जवाब मिला, "काले कुम्हड़े का, हरी मिर्च का!" और लड़के एक सुर में बिचुकन की कविता के बोल गा उठे—

"हरी मिर्च और काला कुम्हड़ा
जो बैठा है, हो जाए खड़ा।"

आसनसोल स्टेशन आते ही बूढ़े सज्जन वहाँ स्नान करने के लिए उतर पड़े। बूढ़े के वापिस लौटते ही बिचुकन ने चेतावनी देते हुए कहा, "इस डिब्बे से उतर जाने में ही आपकी भलाई है।"

"ऐसा क्यों?"

"यहाँ डिब्बे के कुछ चूहों को बड़ा कष्ट है।"

"चूहे? मतलब क्या है आपका?"

"देखिए न, चूहों ने आपकी हंडियों में घुसकर क्या धमाल कर दिया है?"

बूढ़े सज्जन ने देखा कि रसगुल्लों से भरी हंडियाँ खाली हैं और मीठी खोई का एक दाना भी नहीं बचा है। पोटली को खोजते देख बिचुकन झट बोल उठा, "और आपकी पोटली में न जाने क्या था, उसे तो चूहे उठाकर भाग खड़े हुए हैं।" अब बूढ़े सज्जन को ध्यान आया कि उसमें तो उनके बगीचे के पाँच पके रसीले आम बँधे हुए थे।

बूढ़े सज्जन ने हँसकर कहा, "लगता है चूहों को बड़ी भूख लगी हुई थी।"

बिचुकन ने कहा, "कहाँ? चूहे तो बिना भूख के भी सब चट कर जाते हैं।"

और बच्चे क्यों पीछे रहते। सभी कहने लगे, "हाँ, हाँ ऐसा ही है। कुछ और भी उन्हें मिलता तो वे उसे भी चट कर जाते।"

बूढ़े सज्जन ने मुस्कराते हुए कहा, "बड़ी भारी भूल हो गई। मुझे अगर मालूम होता कि गाड़ी चूहों से भरी पड़ी है, तो मैं उनके लिए कुछ और भी ले आता।" बूढ़े सज्जन को मुस्कराते देख लड़के झेंपकर चुप हो गए। मन-ही-मन सोचने लगे, "काश, गुस्सा करते तो मज़ा आ जाता।"

वर्धमान स्टेशन पर उतरकर जब दूसरी गाड़ी पकड़ने का समय आ गया, तब बूढ़े सज्जन बोल उठे, "इस बार तुम्हें कष्ट नहीं दूँगा। इस बार किसी दूसरे डिब्बे में चढ़ जाऊँगा।"

"सो तो अब होने का नहीं। आपको इस बार भी हमारे ही डिब्बे में चलना होगा। आपकी पोटलियों में अगर अब भी कुछ बचा है तो हम सब बराबर से पहरा देंगे। अब चूहों को कुछ भी खाने न देंगे।"

बूढ़े सज्जन को लड़कों की ज़िद के सामने झुकना ही पड़ा। थोड़ी देर बाद डिब्बे के सामने एक मिठाईवाले का ठेला आकर रुक गया। बूढ़े सज्जन ने मिठाई का दोना हर एक को पकड़ाते हुए कहा, "इस बार चूहों की दावत में कोई गड़बड़ नहीं होगी।"

लड़कों ने खुशी से 'हुर्रे' कहा और मिठाई पर टूट पड़े। मिठाईवाले के बाद आई आमवाले की बारी। भला आम भी कहाँ बचने वाले थे।

लड़कों ने खोज-खबर लेते हुए पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं?"

"मैं रोज़गार की तलाश में निकला हूँ। जहाँ काम मिलेगा, वहीं उतर पड़ूँगा।" बूढ़े सज्जन ने कहा।

लड़कों ने पूछा, "आप क्या काम जानते हैं?"

"मैं टूलो पंडित हूँ, संस्कृत पढ़ाता हूँ।" बूढ़े सज्जन ने उत्तर दिया।

लड़के ताली बजाकर खुशी से उछल पड़े—"फिर तो आपको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। आप हमारे स्कूल में आकर पढ़ाइए।"

"तुम्हारे स्कूल वाले भला मुझे क्यों रखेंगे?"

"रखेंगे कैसे नहीं? हम अपने यहाँ किसी ऐरे-गैरे को थोड़े ही न आने देंगे।"

"तुमने तो मुझे दुविधा में डाल दिया। अगर तुम्हारे स्कूल के अधिकारी मुझे पसंद न करें तो?"

"पसंद न करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। पसंद न करने पर हम स्कूल छोड़ देंगे।"

"अच्छा बाबा, तब तो तुम्हीं ले चलो।"

गाड़ी स्टेशन पर आकर रुकी। वहाँ स्वयं स्कूल के सेक्रेटरी बाबू आए हुए थे। बूढ़े सज्जन को देखते ही उन्होंने आगे बढ़कर उनके पाँव छुए और प्रणाम करते हुए बोले, "आइए, आइए, तर्कालंकार महाशय! आपके रहने का सब इंतज़ाम हो गया है।"

—रवींद्रनाथ ठाकुर

शब्दकोश

झुरमुट – समूह। **बतियाना** – बात करना। **सहमत** – राजी। **अटपटी** – अजीब। **शरारती** – नटखट। **सहसा** – अचानक। **चेतावनी** – खतरे की पूर्व सूचना। **रसीले** – रसदार। **ज़िद** – हठ। **रोज़गार** – काम-धंधा। **तलाश** – खोज। **दुविधा** – परेशानी। **सेक्रेटरी** – सचिव। **श्राद्ध** – पितरों की प्रसन्नता हेतु किया जाने वाला कार्य।

विशेष : **मानक वर्तनी के प्राचीन एवं नवीन रूप**

छुट्टी	– छुट्टी	बिल्कुल	– बिलकुल	सज्जन	– सज्जन	मिट्टी	– मिट्टी
बन्द	– बंद	बुड्ढे	– बुड्ढे	श्राद्ध	– श्राद्ध	पण्डित	– पंडित
उत्तर	– उत्तर	पसन्द	– पसंद	इन्तज़ाम	– इंतज़ाम	सेक्रेट्री	– सेक्रेटरी

समग्र एवं सतत अभ्यास Summative and Formative Assessment CCE Based

पाठ बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए: समेटिव असेसमेंट

क. बिचुकन ने बूढ़े सज्जन को क्या सलाह दी?

ख. बूढ़े सज्जन ने चूहों के धमाल मचाने पर क्या प्रतिक्रिया की?

ग. गाड़ी बदलते समय लड़कों ने क्या ज़िद की?

घ. बूढ़े सज्जन ने लड़कों को क्या बताया कि वह कहाँ जा रहा है?

ङ. अंत में बूढ़े सज्जन का कौन-सा राज खुल गया?

2. सही उत्तर के आगे ✓ लगाइए: M C Qs

क. लड़कों ने नए अध्यापक का क्या नाम सुना था?

कालीचरण ☐ बिचुकन देव ☐ काली कुमार तर्कालंकार ☐

ख. बच्चे किस साधन के द्वारा स्कूल लौट रहे थे?

बस ☐ रेलगाड़ी ☐ घोड़ागाड़ी ☐

ग. किस स्टेशन पर बूढ़े सज्जन स्नान करने के लिए उतर गए?

वर्धमान ☐ आसनसोल ☐ वाराणसी ☐

घ. बिचुकन कैसा लड़का था?

शरारती ☐ सीधा-सादा ☐ विकलांग ☐

3. खाली स्थान पर उपयुक्त शब्द छाँटकर भरिए:

क. छुट्टियों में सब बच्चे अपने-अपने _____ चले गए।

ख. गाड़ी एक छोटे से _____ पर रुकी।

ग. बूढ़े सज्जन ने देखा कि _____ से भरी हंडियाँ खाली हैं।

घ. स्टेशन पर स्वयं स्कूल के _____ बाबू आए हुए थे।

M C Qs

स्कूल/घर

स्टेशन/अड्डे

रसगुल्लों/लड्डुओं

सेक्रेटरी/प्रधान

4. ऐसा किसने, किससे कहा?

वाक्य	किसने कहा	किससे कहा
क. "यहाँ डिब्बे के कुछ चूहों को बड़ा कष्ट है।"		
ख. "लगता है चूहों को बहुत भूख लगी थी।"		
ग. "अब चूहों को कुछ भी खाने नहीं देंगे।"		
घ. "अच्छा बाबा, तब तो तुम्हीं ले चलो।"		

भाषा एवं व्याकरण

1. मानक वर्तनी के शुद्ध रूप के आगे ✓ लगाइए: M C Qs

छुट्टियाँ ☐ छूट्टियाँ ☐ छुट्टियाँ ☐ | श्राध ☐ श्राद्ध ☐ श्राद्ध ☐

खत्म ☐ ख़तम ☐ खत्म ☐ | धयान ☐ धिय्यान ☐ ध्यान ☐

2. बहुवचन रूप लिखिए:

छुट्टी – _____ लड़का – _____ चूहा – _____ मिठाई – _____

हंडिया – _____ डिब्बा – _____ रसगुल्ला – _____ ताली – _____

3. स्त्रीलिंग रूप लिखिए:

अध्यापक – _____ लड़का – _____ कवि – _____ बूढ़ा – _____

डिब्बा – _____ बेटा – _____ चूहा – _____ मौसा – _____

4. दिए विशेष्यों से पूर्व उचित विशेषण लिखिए:

नए	छोटे	भारी	बूढ़े	शरारती	हरी	काला	आधी

_____ स्टेशन _____ अध्यापक _____ भूल _____ सज्जन

_____ लड़का _____ मिर्च _____ छुट्टी _____ कुम्हडा

5. दिए शब्द-युग्मों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

मौज-मस्ती – _____

कभी-कभार – _____

छोटी-बड़ी – _____

रचनात्मक अभ्यास

1. मौखिक उत्तर दीजिए: फॉरमेटिव असेसमेंट

क. सभी लड़के किस बात पर सहमत थे?

ख. नए अध्यापक का क्या नाम था?

ग. बूढ़े सज्जन के पास क्या सामान था?

घ. चूहों ने क्या धमाल मचाया?

2. आपने भी कभी रेलयात्रा की होगी। यात्रा करने के लिए हम अपने साथ कुछ ज़रूरी सामान लेकर चलते हैं। उस आवश्यक सामान की सूची बनाइए।

3. बच्चो, आपको पता है कि पुराने अखबारों से बहुत-सी वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं; जैसे—फूलदान, फलों की टोकरी, नाव, मुखौटा आदि।

आइए, हम एक मुखौटा बनाएँ:

सामग्री : एक बड़ा गुब्बारा, कुछ पुराने अखबार, एक बाउल, पानी, फेविकोल, ब्रश।

बनाने की विधि : जिस आकार का आपको मुखौटा बनाना है, उसी के अनुसार एक फूला हुआ गुब्बारा ले लीजिए। गुब्बारे के निचले हिस्से को एक बाउल में रखें। पानी तथा फेविकोल की बराबर मात्रा लेकर घोल लें। अखबार के टुकड़े कर लीजिए। अखबार के टुकड़ों को गुब्बारे के ऊपर रखें और साथ ही फेविकोल मिला पानी ब्रश से लगाते जाएँ। जब गुब्बारे के ऊपर टुकड़ों की 1 सेमी० की तह हो जाए, तो उसे सूखने के लिए छोड़ दें। अगले दिन उस गुब्बारे के निचले हिस्से को काट लें। रंगीन कागज़ लगाकर जैसा चेहरा बनाना चाहें, उस पर बना लें। यह लो मुखौटा तैयार हो गया।

लेखक-परिचय

रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 को बंगाल के जोड़ासांको के एक संपन्न परिवार में हुआ था। उन्होंने छोटी उम्र में स्वाध्याय के बल पर अनेक विषयों का ज्ञान अर्जित कर लिया था।

इन्होंने लगभग एक हज़ार कविताएँ, दो हज़ार गीत, अनेक कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध आदि की रचना की। इन्हें काव्य संग्रह 'गीतांजलि' की रचना पर सन् 1913 में 'नोबल पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इन्होंने बंगला के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी बहुत-सा साहित्य लिखा।

इन्होंने कोलकाता में 'शांतिनिकेतन' नामक एक सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्था की स्थापना की। शिक्षा और कला जगत में इसे एक अनूठी संस्था माना जाता है। 7 अगस्त, 1941 में इनका स्वर्गवास हो गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— 'गीतांजलि', 'क्षणिका', 'नैवेद्य', 'सांध्यगीत' (काव्य); 'काबुलीवाला' (कहानी); 'गोरा' (उपन्यास) आदि।

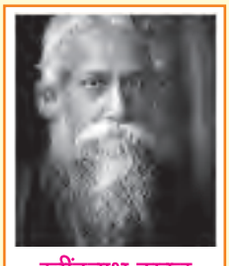

रवींद्रनाथ ठाकुर
(1861-1941)